प्रेस विज्ञप्ति

वीरांगना अवन्तीबाई राजकीय महाविद्यालय अतरौली की रूसा के अन्तर्गत एक भारत श्रेष्ठ भारत विषय की पाँच दिवसीय वेबिनार का सोमवार को समापन हुआ। इस समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय अलीगढ़ के प्राचार्य डा० पंकज कुमार वार्ष्णेय ने की। आज की वेबिनार का मुख्य विषय भारत के प्रादेशिक व्यंजन था। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता श्री रामसूर्ति स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदोई की प्राचार्य डा० श्रीमती शशी कपूर ने बताया कि भारत विभिन्न प्रान्तों का देश है तथा विभिन्न प्रान्तों में भिन्न भिन्न प्रकार के व्यंजन मिलते हैं। भारत की ख्याति न केवल उसकी संस्कृति से है अपितु वहाँ के व्यंजन भी भारत की श्रेष्ठता में मुख्य भूमिका निभाते हैं। भारत के परम्परागत लोग प्रादेशिक मसालों का प्रयोग कर गोलगप्पे, दही बड़ा, चीला आदि का सेवन किया करते थे तथा स्वस्थ रहते थे लेकिन वर्तमान समय में आज के लोग फास्ट फूड खाना पसन्द करते हैं जिसमें पिज्जा, बर्गर, चाउमीन, पास्ता आदि शामिल हैं। फास्ट फूड आसानी से बाजार में होटल व रेस्टोरेन्ट में उपलब्ध हो जाता है। आज की गृहणियां भी फास्ट फूड को प्राथमिकता देती हैं क्योंकि इससे उनका समय बचता है तथा तनाव कम होता है। आज के खान-पान ने डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, कैन्सर जैसी बीमारियों को जन्म दिया है जो पहले कम सुनने को मिलती हैं। विषय पर बोलते

हुये टीकाराम कन्या महाविद्यालय अलीगढ़ की गृहविज्ञान विभाग की एसोसियेट प्रोफेसर डा० नीता वार्ष्णेय ने पावर पाइन्ट प्रजेन्टेशन के माध्यम से विभिन्न प्रान्तों में पाये जाने वाले प्रमुख व्यंजनों की तस्वीर प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि साउथ का इडली साँभर डोसा, पंजाब का छोले भटूरे, गुजरात का खाण्डवी ढोकला, गुजरात का ढोकला, उ०प्र० में जलेबी पूरी, महाराष्ट्र का बड़ा पाँव आज भी मशहूर हैं। पहले (एक प्रान्त के) निवासी दूसरे प्रान्त के व्यंजन खाने के लिये लालायित रहता था लेकिन आज ऐसी व्यवस्था हो गयी है कि हर प्रदेश में हर प्रकार के व्यंजन उपलब्ध हो जाते हैं। आज अलीगढ़ में रहकर साउथ के डोसे, पंजाब के छोले भटूरे का आनन्द ले सकते हैं। डा० नीता ने बताया कि प्रादेशिक व्यंजन जहां एक ओर स्वादिष्ट होते हैं वहीं स्वास्थ्यवर्द्धक होते हैं। अपने अध्यक्षीय भाषण में डा० पंकज कुमार वार्ष्णेय ने बताया कि हमें वर्तमान परिस्थिति में घर का बना ही खाना खाना चाहिये। वर्क फ्राम होम के अन्तर्गत आयोजित इस वेबिनार की प्रशंसा करते हुये बताया कि हमें सोशल डिस्टेन्सिंग का पालन करते हुये हमें घर पर ही रहना चाहिये तथा सरकार द्वारा जारी एडवाईजरी का पालन करना चाहिये। इस अवसर पर वेबिनार आयोजन सचिव डा० एस० के० वार्ष्णेय ने पाँच दिनों की प्रगति आख्या प्रस्तुत करते हुये बताया कि इस वेबिनार में 4 राज्यों के विद्वान वक्ताओं ने अपने विचार रखे तथा 17 राज्यों के प्राध्यापकों, शोध छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन नोडल अधिकारी डा० कुलेश कुमार ने किया। इस वेबिनार में प्राचार्या डा० माजदा खान, डा० आर०

पी० एस० शाक्य, डा० यू० सी० शर्मा, डा० राजीव कुमार उपाध्याय.
डा० अनूप कुमार, डा० चन्द्रवीर सिंह तथा डा० कल्पना वार्ष्णेय
उपस्थित थे। अन्त में डा० सुरेश कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।